इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना पुस्तक के किसी भी अंश की, ई-बुक, फोटोकापी, रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक, मशीनी, किसी भी माध्यम में और ज्ञान के संग्रहण एवं पुनः प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रयारित नहीं किया जा सकता।

प्रलेक प्रकाशन

702, जे-50, ग्लोबल सिटी, विरार (वेस्ट), मुम्बई, महाराष्ट्र-401303

दूरभाष : 7021263557

Email : pralek.prakashan@gmail.com

Website : www.pralekprakashan.com

मैनेजर पाण्डेय : एक शिनाख्त - अर्चना त्रिपाठी

Manager Pandey Ek Shinakht *by* Archna Tripathi

ISBN : 978-93-5072-XXX-X

© 2021 अर्चना त्रिपाठी

पेपरबैक संस्करण

मूल्य : 250

आर.के. ऑफसेट, शाहदरा, दिल्ली में मुद्रित

प्रलेक प्रकाशन का लोगो मिक्की पटेल की तूलिका से

साहित्य विवेक और इतिहास बोध का समन्वय
प्रभात कुमार मिश्र 156

लोकगीतों और गीतों में 1857: एक ऐतिहासिक दस्तावेज
रेखा पाण्डेय 164

आधुनिक हिन्दी कविता और मैनेजर पाण्डेय की काव्य दृष्टि
पल्लवी प्रकाश 173

अनभै साँचा : मानवीयता की तलाश
गौरी त्रिपाठी 184

संवाद का आस्वाद– मैनेजर पाण्डेय के साक्षात्कार
अम्बरीश त्रिपाठी 192

अनभै साँचा : मुक्ति की खोज
योगेन्द्र नाथ मिश्र 201

दो- प्रतिनिधि आलोचनात्मक निबंध

भक्तियुगीन कविता की लोकधर्मिता 215

उपन्यास और लोकतंत्र 226

शृंखला की कड़ियां : मुक्ति की राहें 254

क्या आपने वज्र-सूची का नाम सुना है? 270

रीतिकाल की कविता और इतिहास बोध 282

नागार्जुन : काव्य की भूमि और भूमिका का विस्तार 293

समाज साहित्य और आलोचना 302

सुब्रह्मण्यम भारती की काव्य प्रतिभा 309

संस्मरण

शमशेर की सज्जनता 327

वैद्य जी बेढब नहीं थे 333

नाना जी (मैनेजर पाण्डेय) : कुछ अनकहे किस्से- उर्वशी कुमारी 338

साक्षात्कार

वाद मेरा मार्क्सवाद है, संवाद मेरा शुक्ल जी द्विवेदी जी से और विवाद मेरा प्रगतिवादियों से रहा है (मैनेजर पाण्डेय से अल्पना त्रिपाठी की बातचीत) 347

अनभै साँचा : मानवीयता की तलाश

✍ गौरी त्रिपाठी

हिंदी आलोचना को सहजता और स्वाभाविकता के साथ अगर किसी के पास देखने जाना हो तो वह नाम है मैनेजर पाण्डेय का। हिंदी आलोचना का एक बड़ा नाम जो रचना की अंतरंगता में उतर कर उसके साथ खड़ा हो जाता है और वह पाठकों पर छोड़ देता है कि उस किताब या उस रचना या उस पात्र का मूल्यांकन हम किस प्रकार करें। यह आलोचना समाजशास्त्रीय और बहुत मानवीय दृष्टिकोण पर आधारित होती है। विद्यार्थी जीवन से ही मैं मैनेजर पाण्डेय की दो पुस्तकें कई बार पढ़ी हूं। एम.ए. के दौरान जब सूरदास को वृहत्तर तरीके से पढ़ना हुआ तो भ्रमरगीत सार की भूमिका के अलावा कोई आलोचनात्मक नोट्स हमारे पास नहीं थे उस समय हमें किताब मिली भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्य। लगा कि जैसे सूरदास पर और भ्रमरगीत पर बहुत अच्छा नोट्स बना लेंगे। यह तो रही बहुत छोटी सी बात कि मैं अपने जीवन में मैनेजर पांडे की आलोचना पद्धति से किस प्रकार परिचित हुई। फिर धीरे-धीरे हम हर विषय पर इनको पढ़ना बेहद अनिवार्य समझने लगे और सच कहा जाए तो रचनाओं को लोकतांत्रिक तरीके से देखने और समझने की शुरुआत यहीं से होती है। 'अनभै सांचा' मैनेजर पाण्डेय के बेहतरीन आलोचनात्मक लेखों का बेहतरीन चयन है। यह किताब तो अपने आप में हिंदी साहित्य को देखने की एक मुकम्मल कोशिश है जिसमें लगभग सभी युग के महत्त्वपूर्ण लेख हैं चाहे वह भक्ति काव्य हिंदी आलोचना हो, शृंखला की कड़ियां हों या मुक्तिबोध का आलोचनात्मक संघर्ष हो। मुझे इस किताब के 2 अध्याय बहुत प्रिय हैं। पहला शृंखला की कड़ियां: मुक्ति की राहें और रेणु पर मानवीयता की तलाश का कलात्मक प्रयास। इसके अतिरिक्त हिंदी की मार्क्सवादी आलोचना, उपन्यास का समाजशास्त्र, भक्तिकाल और हिंदी आलोचना, आज का समय और कविता का संकट साहित्य की बहुत